अगर तुम युवा हो!

शशि प्रकाश

चलना होगा एक बार फिर
बीहड़, कठिन, जोखिम भरी सुदूर यात्रा पर,
पहुंचना होगा उन ध्रुवान्तों तक
जहां प्रतीक्षा है हिम शैलों को
आतुर हृदय और सक्रिय विचारों के ताप की।
भरोसा करना होगा एक बार फिर
विस्तृत और आश्चर्यजनक सागर पर।
उधर रहस्यमय जंगल के किनारे
निचाट मैदान के अंधेरे छोर पर
छिटक रही हैं जहां नीली चिंगारियां
वहां जल उठा था कभी कोई हृदय राहों को रौशन करता हुआ।
उन राहों को ढूंढ़ निकालना होगा।
और आगे ले जाना होगा
विद्रोह से प्रज्वलित हृदय लिये हाथों में
सिर से ऊपर उठाये हुए,
पहुंचना होगा वहां तक
जहां समय टपकता रहता है
आकाश के अंधेरे से बूंद-बूंद
तड़ित उजाला बन।
जहां नीली जादुई झील में
प्रतिपल कांपता रहता अरुण कमल एक,
वहां पहुंचने के लिए
अब महज अभिव्यक्ति के ही नहीं
विद्रोह के सारे खतरे उठाने होंगे,
अगर तुम युवा हो!